कुल पृष्ठ संख्या–32 (कवर पेज सहित)

क्रम संख्या....

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

उच्च माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures)

(In Words) ----------

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में - ----------

माध्यम – हिन्दी ✓ अंग्रेजी

विषय चित्रकला

परीक्षा का दिन बुधवार

दिनांक २५-०६-२०

दिनांक .....

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य है, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदारणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी (परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग में लिया गया है। 167/2020

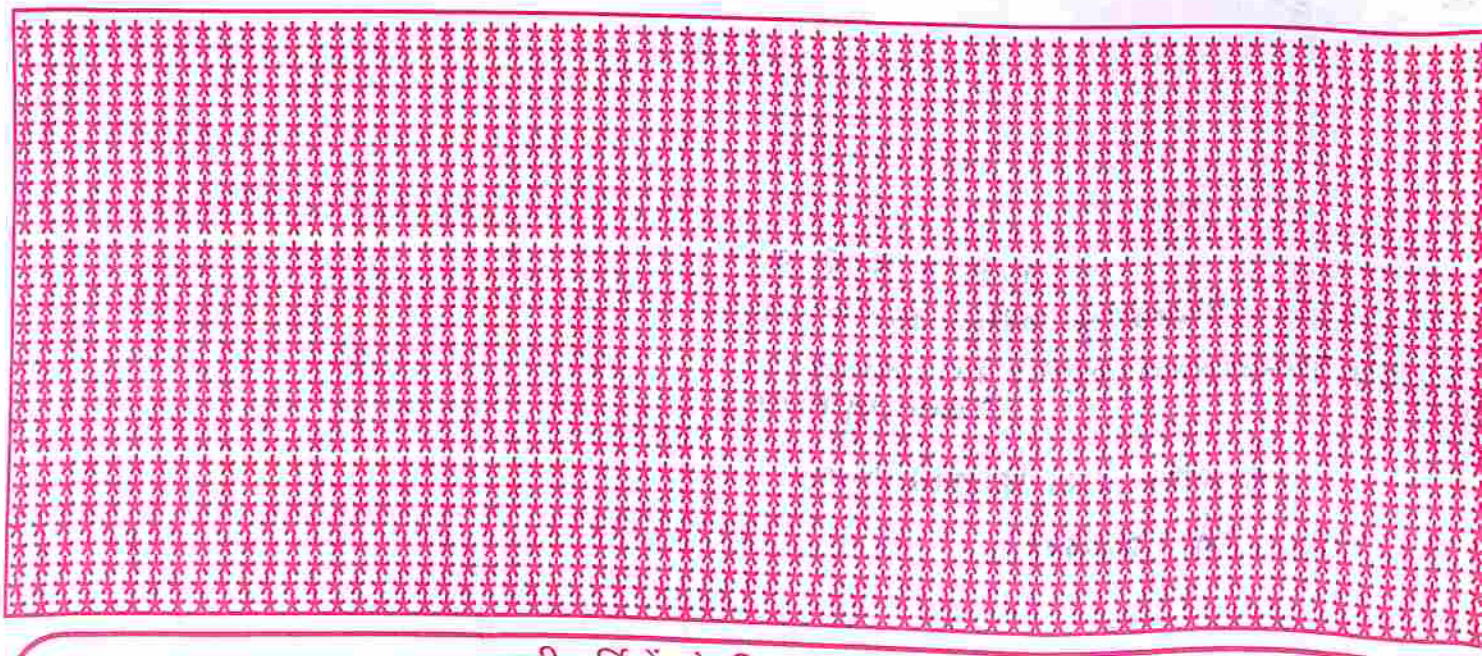

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंषा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध है।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
उत्तर	1	दैलवाड़ा का जैन मंदिर सिरोही जिले के माउन्ट आबू मे स्थित है।
	2	दैलवाड़ा के जैन मंदिर अपनी स्थापत्यकला और वास्तुकला के लिए जाना जाता है।
	3	रणकपुर जैन मंदिर पाली जिले मे स्थित है।
	4	राजस्थान का खजुराहो किराडु को कहा जाता है।
	5	आभानेरी का प्राचीन नाम आभा नगर है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
~~उत्तर~~	~~5~~	~~आभार आभानेरी~~
उत्तर	6	चाँद बावड़ी का निर्माण राजा मिहिर भोज द्वारा करवाया गया इन्हे राजा चाँद के नाम से भी जाना जाता है।
उत्तर	7	उषा रानी हुच्चा के मूर्तिशिल्प का नाम 'रिसर्च स्कॉलर' है।
उत्तर	8	गोपीचन्द्र मिश्रा अपनी उत्कृष्ट मूर्तिशिल्पों के निर्माण के लिए प्रसिद्ध है।
उत्तर	9	अर्जुनलाल प्रजापति के प्रसिद्ध मूर्तिशिल्प का नाम 'बनी - ठनी' है

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
उत्तर	10	पंकज गहलोत अपने मूर्तिशिल्पो मे माध्यम के रूप मे काले रंग के पत्थरों का उपयोग करते है।
उत्तर	11	मातीशम शर्मा की मूर्तियाँ यूरोपिय शास्त्रीय शिल्पों के समकक्ष मानी जाती है यह इनके मूर्तिशिल्प की विशेषता है।
उत्तर	12	माटी मानस संस्थान की स्थापना अर्जुनलाल प्रजापति ने की थी।
उत्तर	13	कम्पनी शैली के चित्रकारो ने भारत के दृश्य चित्र, यहाँ के पुरातात्विक महत्व के स्थलो, यहाँ के वनस्पति, कीट पतंगो, साधारण कामकारों को अपना विषय बनाया।

BSER 167/2020

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
उत्तर	14	राजा रवि वर्मा का चित्र रावण और जटायु एक प्रसिद्ध चित्र है इस चित्र मे उन्होने रावण द्वारा सीता का अपहरण और रावण पर जटायु का हमला पर रावण द्वारा जटायु का वध किए जाने की घटना का वर्णन है इसमे रावण की क्रोधयुक्त मुद्रा, सीता की असहाय अवस्था मे पाश्चात्य शैली का प्रभाव दिखाई देता है।
उत्तर	15	(i) बाल्थाजार सोलामिस (ii) थोमस डेनियल
उत्तर	16	पैग का पूरा नाम प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप है इसकी स्थापना सूजा, रजा, आरा द्वारा 1947 ई. मे की गई इस समूह का उद्देश्य पुरानी रूढ़िवादिता, बंधनो से मुक्त होकर नये रूपाकारो को नई शैली मे प्रारम्भ करना था।

BSER 167/2020

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

उत्तर 17 हैबबर के अपने चित्र मुर्गो की लड़ाई मे पृयोगवादी शैली का उपयोग किया है इस चित्र एक मुर्गे ने दूसरे मुर्गे को घायल कर दिया और स्वत वह रहा है हल्की रेखाओ से बने मुर्गो के पीछे मानव समूह को गहरे रंगो से बनाया गया है इस चित्र मे मानव की स्थिती को व्यंग्य रूप मे पृदर्शित किया गया है।

उत्तर 18 शिल्पी चक्र की स्थापना 25 मार्च 1949 ई. मे धनराज भगत और बी. भावेश चन्द्र सान्याल द्वारा की गई। इस समूह मे दरक्षण लाल, के. सी. आर्यन, दिनकर कौशिक, जया अप्पा स्वामी आदि की सहभागिता हुई।

उत्तर 19 जगदीश स्वामीनाथन कोमल रेखाओ व मधुर रंगो का पृयोग करते है इन्होने पीले व नारंगी रंग की विभिन्न तानो का पृयोग किया है इनके चित्रो मे ज्यामीतिय रूप से बने पर्वतो मे भय होने से पक्षी का अंकन हुआ है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
उत्तर	२०	मीर सय्यद अली जुदाई व ख्वाजा अब्दुल समद शीराजी इन दोनो ईरानी चित्रकारो ने मुगल कला का सूत्रपात किया।
उत्तर	२१	दक्खिनी शैली का प्रसिद्ध चित्र चाँद बीबी पोलो खेलते हुए बीजापुर शैली मे बना एक उत्कृष्ट चित्र है यह चित्र लम्बवत आकार मे बना है ऊपर व नीचे इस चित्र मे बने चोकोर खानो मे लिपी अंकित की गई है इस चित्र मे अग्रभाग मे सरोवर का अंकन है जिसमे कमल पुष्प खिले हुए है आगे हरा मैदान बना हुआ है जिसमे चाँद बीबी को घोड़े पर सवार होकर अन्य महिला खिलाड़ियो के साथ पोलो खेलते हुए दिखाया गया है इसके ऊपर नगरीय संरचना दिखाई गई है। आकाश नीले रंग से बना है। क्षितिज रेखा काफी ऊपर है जिससे अत्यधिक दूरी का आभास होता है। नारी आकृतियो को बहुत सुंदर बनाया गया है। प्रकृति का मनोरम्य चित्रण है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

उत्तर 22 शबीह चित्रण 'व्यक्ति चित्रण' को कहा जाता है मुगल काल मे शबीह चित्रण काफी उत्कृष्ट हुआ था जिसका उदाहरण अकबर काल मे बना राजा पृथु का चित्र है। मुगल चित्रकार शबीह बनाने मे पूर्ण दक्ष थे इस समय संतो, फकीरो, सम्राटो, राजकुमारो, प्रसिद्ध व्यक्तियो आदि सभी का शबीह चित्रण बनाया गया। शबीह चित्रण अकबर, जहाँगीर, शाहजहाँ इन सभी मुगल शासको के समय मे देखने को मिलता है।

उत्तर 23 जहाँगीर कालीन मुगल कला की विशेषताएँ निम्नलिखित है।

(i) इस समय प्रकृति चित्रण भारतीयता से परिपूर्ण था।
(ii) चित्रो मे यथार्थता, बारीक रेखांकन देखने को मिलता है।
(iii) वस्त्रो की सलवटो, फरहानो का सुंदर अंकन हुआ है
(iv) इस समय सुफियाना रंग योजना देखने को मिलती है
(v) चेहरे एक चरम बनाए गए
(vi) हाथियो का चित्रांकन अत्यंत से सामयता रखता है
(vii) पुरुष आकृतियो को जामा, पायजामा, कलगीदार पगड़ी पहने चित्रित किया है स्त्रियो आकृतियो मे ओढ़नी को बढ़ावा मिला
(viii) शैली पूर्णत। भारतीयता से परिपूर्ण थी।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
उत्तर	२५	पहाड़ी शैली मे शृंगारिक विषय नायिक-नायिका का सुंदर चित्रांकन हुआ है यहाँ नारियो को स्वकीया, परकीया, सामांय रूप मे चित्रित किया गया है भारतीय शास्त्र मे आठ प्रकार की नायिकाओ का उल्लेख मिलता है जिनमे स्वाधीनपतिका, वासक सज्जा व अभिसारिका नायिका का प्रमुखता से अंकन हुआ है नायिको को मर्यादित आदर्श गुणो मे चित्रित किया गया है। नारी देह को लयात्मक, कृषकाय, बनाया गया है। रसमंजरी पर आधारित नायिकाओ मे उत्कण्ठिता और अभिसंधिता का अंकन हुआ। पहाड़ी शैली मे नायक के रूप मे कृष्ण व नायिकाओ के रूप मे राधा को चित्रित किया गया है।
उत्तर	२५	पहाड़ी शैली की विशेषताएं निम्नलिखित है।
	(i)	यहाँ आकृतियो मे भावनात्मकता व लयात्मकता देखने को मिलती है
	(ii)	धारियें पतले पट्टीनुमा बनाये गये है जिनमे गहरा लाल व पीला रंग भरा गया है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(iii) प्रकृति चित्रण बहुत मनोरम हुआ है गहरे रंग की पृष्ठभूमि मे वृक्षो को हल्के रंगो से बनाया गया है

(iv) पशु चित्रण मे स्थानीय प्रजाति के पशुओ का अंकन हुआ है जिन्हे कमजोर व दुबला-पतला दिखाया गया है

(v) भवनो का अंकन सफेद रंग मे किया गया है

(vi) परिधान मे पुरुष को जामा, पायजामा, पगड़ी पहने व स्त्रीयो को लहंगा, कचुंकी, पारदर्शी ओढ़नी ओढ़े चित्रित किया गया है।

BSER-16/2020

उत्तर 26 रामगोपाल विजवर्गीय

(i) जन्म :- इनका जन्म 1905 मे सवाई माधोपुर मे हुआ

(ii) शिक्षा :- इनकी कला की शिक्षा महाराजा स्कूल ऑफ आर्ट से हुई जहाँ इन्होने शैलेन्द्रनाथ डे के निर्देशन मे 1934 ई को कला मे डिप्लोमा प्राप्त किया।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(iii) माध्यम :- इन्होंने टेम्परा, वॉश पद्धति को माध्यम बनाया। इन्होंने टेम्परा व वॉश पद्धति को मिलाकर इन्होंने नयी तकनीक का निर्माण किया।

(iv) चित्र व उनके विषय :-
इन्होंने कई विषयों पर चित्र बनाये।

धार्मिक विषय के चित्र :-
राम की वन यात्रा, विश्राम करते राम और सीता, विरही राम, वानरों के साथ राम, कृष्ण-सुदामा, धृतराष्ट्र गांधारी, अर्जुन उर्वशी इनके चित्र है।

ग्रामीण विषयों के चित्र :-
ग्रामीण बालाएँ, वृद्ध किसान, पशु-पक्षी, मदारी, तमाशा दिखाने वाला, गणगौर, तीज, गुब्बारे वाला आदि।

साहित्य आधारित चित्र :-
मेघदूत, अभिज्ञान शाकुन्तलम, गीत गोविंद, बिहारी सतसई, ऋतु संहार आदि है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

इनके अलावा रामायण, महाभारत, रागमाला जातक कथाएँ, गीत गोविंद, उमरखैयाम आदि इनके व्यक्तिगत शैली के चित्र है।

(v) चित्रो की विशेषताएँ।
~~इन~~ इन्होने चित्रो मे वक्र शारिरिक मुद्राए, अधरझुकी आँखे; किंचित मुस्कान, अजंता के समान भुजाओ का अंकन ~~ह~~ देखने को मिलता है

श्रीधर वाकणकर के अनुसार इनके मेघदूत के चित्रो मे उतनी ही भावगम्यता है जितनी कालीदास की ~~चित्रो मे है।~~
कविताओ

(vi) पुरस्कार।- 1970 ई. मे राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा कलाविद् प्रदान किया गया
1984 ई. मे भारत सरकार द्वारा पद्म श्री से सम्मानित किया गया।

(vii) मृत्यु।- 2005 मे इनकी मृत्यु हुई।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
उत्तर	27	एलिफेंटा :-

शब्दृइटकालीन मंदिरो मे एलिफेंटा का शिव मंदि प्रमुख है यह मुंबई से 6 मील की दूरी पर स्थित है यह स्थान घारापुरी के नाम से जाना जाता है। शिव का मंदिर अपने प्रवेश द्वार से 60 फीट चौड़ा व 18-20 फीट ऊँचा है मंदिर के मध्य मे शिव की ~~त्रिशिख~~ त्रिशिरा मूर्ति स्थापित है यह मूर्ति 18 फीट ऊँची है शिव के मुखमंडल पर प्रशांत गम्भीरता व्याप्त है विशाल जटाजूट और मोतियो से सुसज्जित मुकु उनके संकल्प को प्रतिष्ठित करता है।

धीर अधीर चिंतनशील मस्तक, मोचित पलको से नीचे देखते शिव, ग दोट रस भाव पूरित है। मूर्ति के बायॉ ओर का मुखमंडल शिव के रौद्र भैरव के भाव को दर्शाता है। गले व ह मे स व हाथो मे नर मुण्ड ~~हस्थ~~ रूप व बल मे असाध है। दायी ओर का मुखमंडल पार्वती रूप आभ व मोतियो व पुष्पो से सुसज्जित मुकुट सुंदर पार्वती के हाथो मे कमल पुष्प उनके सृष्टि के प्रति सोम्य भाव को दर्शाता है।

~~त्रिशीया~~ त्रिशीर्ष मूर्ति के दोनो ओर के स्तम्भ व ब्रह्मा रूप को प्रदर्शित करते है।

दांयी ओर अर्द्धनारीश्वर की 16 फीट ऊँची प्रतिमा प्रकृति पुरुष के साहचर्य से सृष्टि के सृजन की प्रतीकात्मकता का द्योतक है बॉयी ओर का मुखम शिव - पार्वती विवाह के लावण्य से सृष्टि के प्र

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

को दर्शाता है
शिव नटराज की मूर्ति सृष्टि के संतुलन को दर्शाती है
शिव योगेश्वर की मूर्ति पुरुष के स्वयं की चित्त जागृति के आध्यात्म को प्रदर्शित करती है
शिव गंगधर की मूर्ति तप व श्रम के साध्य को दर्शाती है।

उत्तर 28 देवी प्रसाद राय चौधरी एक प्रसिद्ध मूर्तिकार है इन्होने अपने मूर्तिशिल्पो के माध्यम से मध्यम वर्ग के जीवन संघर्ष को दर्शाया है। इन्होने कांस्य, मिट्टी, प्लास्टर ऑफ पेरिस के माध्यम से मूर्तियो का निर्माण किया है। शहीद स्मारक, श्रम की विजय व महात्मा गांधी इनके मूर्तिशिल्प है।

(i) शहीद स्मारक।

यह मूर्तिशिल्प कांस्य माध्यम मे बनी है इसकी रचना 1956 ई. मे की गई। इस संयोजन मे सात युवको को दिखाया गया है जिन्होने ध्वज फहराने के प्रयास मे अपने प्राण गंवा दिए थे इसी घटना को इस मूर्ति के माध्यम से जीवंत किया गया है इस मूर्तिशिल्प मे तीन युवको को गिरते - पड़ते दिखाया गया है।, आगे एक युवक ध्वज हाथ मे लेकर चल रहा है एक युवक दूसरे घायल युवक को संभाल रहा है। दो युवक सीना ताने आगे बढ़ रहे है इस मूर्तिशिल्प मे शहीदो के जोश, अंग्रेजो की

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

क्रूरता को शरीर के मासंपेशियो के खिंचाव से अद्भुत प्रकार से प्रदर्शित किया गया है। यह मूर्ति पटना सचिवालय मे स्थापित है

(ii) श्रम की विजय :

यह मूर्तिशिल्प चेन्नई मे समुद्र के किनारे बनाई गई है इसका निर्माण 1959 मे किया गया। इस संयोजन मे चार व्यक्तियो को एक चट्टान लुढ़काने मे प्रयासरत दिखाया गया है। चट्टान लुढ़काने मे होने वाले परिश्रम को मासंपेशियो के खिंचाव व शारिरिक मुद्राओ द्वारा प्रदर्शित किया गया है। चारो व्यक्ति एक पतला कपड़ा सिर पर बांधे व अधोवस्त्र पहने हुए है इस मूर्तिशिल्प मे सामूहिक परिश्रम द्वारा कठिन कार्य को भी सफलतापूर्वक निष्पादन करने की कला को प्रदर्शित किया गया है। इस चित्र मे यथार्थवाद शैली का प्रदर्शन होता है कलागत दृष्टि से गति, लय, तेज इस मूर्तिशिल्प के विशेषताएं है

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
उत्तर	30	अवनीन्द्रनाथ टेगौर
	(i)	जन्म :- इनका जन्म 1871 ई मे पश्चिम बंगाल के जोशसंकु मे हुआ
	(ii)	शिक्षा :- इन्होंने आरम्भिक शिक्षा विद्यालय से ग्रहण की संस्कृत, फारसी, साहित्य की शिक्षा अपने पिता गुणेन्द्रनाथ से प्राप्त की कला की विधिवत् शिक्षा इटालियन कलाकार श्री गिलहार्डी व यूरोपियन कलाकार श्री पामर से प्राप्त की
	(iii)	संस्था की स्थापना :- 1907 ई मे बड़े भाई गगनेन्द्रनाथ के साथ मिलकर ' इण्डियन सोसाईटी ऑफ ओरियंटल आर्ट की स्थापना कि।
	(iv)	माध्यम :- जल रंग, तेल रंग, पैस्टल रंग, यूरोपिय शैली आदि माध्यमो मे चित्र बनाए।
	(v)	चित्र व उनके विषय :- इन्होंने विभिन्न माध्यमो मे चित्र रचना की यूरोपिय शैली के चित्र :- रवीन्द्रनाथ टेगौर की पुस्तक चित्रांगदा का आधारित चित्रो की रचना यूरोपिय शैली मे की

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

भारतीय शैली के चित्र :-

इनका चित्र शुन्तला इनकी भारतीय शैली के प्रयोग को प्रदर्शित करता है इन्होंने कृष्ण चरित, बुद्ध चरित पर चित्र बनाए। संस्कृत साहित्य व पौराणिक ग्रंथो पर चित्र रचनाएँ की इन्होंने रामायण, महाभारत, ऋतुसंहार पर आधारित चित्र बनाए। अभिसारिका, शिशिर व मृग, बुद्ध व सुजाता आदि इनके प्रसिद्ध

वॉश पद्धति पर आधारित चित्र :-

इन्होंने वॉश तकनीक पर 1901 से 190 की। उमरखैयाम चित्र रचनाएँ आर विरही शिव, गणेश आदि इनके इसी पद्धति के चित्र है।

पेस्टल रंगो मे चित्रण।

का सशक्त प्रयोग किया इन्होंने पेस्टल बने गांधीजी, टैगोर व एन्ड्रयूस के पेस्टल रंगो काफी प्रसिद्ध है। लैला मजनू चित्र शृंख कृष्ण पर चित्र शृंखला भी बनाई। औरंग आलमगीर, नूरजहाँ पर अब्बा के चित्र आकर्षक है

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(vi) प्रसिद्ध चित्र :-

भारत माता :-

इस चित्र का निर्माण टैगोर ने बंगाल विभाजन के फलस्वरूप हुए विरोध से प्रेरित होकर किया इस चित्र मे भारत माता को जोगिया रंग के वस्त्र पहने चित्रित किया गया है चार भुजाएँ बनाई गई है। भारत माता के पीछे प्रभामण्डल बना है चेहरे पर अनिर्विचारणीय भाव है मुगल कला से प्रभावित चारो ओर हाशिया बनाया गया है।

शाहजहाँ का अंतिम दिन :-

यह चित्र मुगल शैली से प्रभावित है इसमे शाहजहाँ को झरोके से ताजमहल को निहारते हुए दिखाया गया है।

(vii) मृत्यु :- इनकी मृत्यु 1951 ई मे हुई यह चित्रकार के साथ कवि, लेखक, नाटककार, वास्तुकार भी थे।

BSER-167/2020

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
उत्तर	२७	

जयपुर शैली

जयपुर शैली देश - विदेश मे नगर विन्यास, वास्तु सौन्दर्य और कला के लिए जाना जाता है जयपुर की स्थापना 1699 से 1743 ई. के मध्य सवाई जयसिंह द्वारा की गई इस समय कछवा वंश की रियासत आमेर से जयपुर स्थानांतरित हुई थी जयपुर के मुगलो दरबार से अच्छे संबंध थे।

मानसिंह के समय 1600 से 1614 ई. के मध्य आमेर के पास ही बने भित्ती चित्र इस समय की कला का प्राचीनतम साक्ष्य है बैराठ के बाग, मोजमाबाद की हतरियां, भारमल की हतरियाँ, अकबरकालीन रज्मनामा जैसे ग्रंथ इस समय के जीवंत साक्ष्य है

जयसिंह के समय बिहारी जैसे कवि हुए

सवाई जयसिंह के समय बारीक रेखांकन, फीकी रंग संगति देखने को मिलती है इस समय संस्कृत व हिंदी ग्रंथो पर आधारित चित्र बनाये हुई

ईश्वरी सिंह के समय साहिबराम और लाल चितेरा जैसे चित्रकार हुए इस समय व्यक्ति चित्र व पशु - पक्षियो की लड़ाई के चित्र प्रमुखता से

IJSER-167/2020

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

बने।

इनके बाद राजा पृथ्वी सिंह, राजा प्रताप सिंह राजा जगत सिंह के समय जयपुर में कला, धर्म, संस्कृति की परम्परा चलती रही इस समय रीतीकालीन साहित्य के साथ धार्मिक विषयों दुर्गा सप्तशी, बिहारी सतसई, रसिकप्रिया, भागवत पुराण आदि पर चित्र रचनाएँ हुई नारी चित्र भी बने।

19वी. शताब्दी मे पाश्चात्य कला का प्रभाव बढ़ने पर जयपुर शैली ने अपनी मौलिकता खो दी

BSER-167/2020

जयपुर शैली की विशेषताएँ :-

(i) पुरुष आकृतियों को मध्यम कद-काठी, गोल चेहरा, छोटी नासिका, मोटे अधर, मीनाकृत नयन, छोटी ग्रीवा और ~~स~~ मुगल वेशभूषा में दिखाया गया है

(ii) ~~स्त्रीयों~~ ~~स~~ स्त्री आकृतियां मध्यमकद काठी, गोल चेहरा, मीनाकृत नयन, छोटी नासिका, ~~मध्य~~ राजस्थानी मुगल मिश्रित वेशभूषा व आभूषणों से सुसज्जित दिखाया गया है

(iii) अंग प्रत्यंगो मे उभार लाने के ~~लिए~~ लिए परदाज का कार्य जयपुर शैली मे देखने को मिलता है। छारोय ईरानी प्रभाव युक्त विभिन्न

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

अलंकरणो से सुसज्जित बनाये गये है

(iv) रंग संगति मे लाल पीला, हरे रंग अतिरिक्त हल्की रंग योजना मुगल प्रभ को दर्शाती है। स्वर्ण रंगो की बाहुल्यत के साथ चित्रो मे माणक, पन्ना, मो आदि रत्नो की जड़ाई का कार्य जयपुर शैली को निजता प्रदान करता है। हरे रंग के आधिक्य वाले चित्रो मे ल की पतली किनार से युक्त लाल-काले के हाशिये बने है।

(v) चित्रो मे अंतराल व्यवस्था चित्र के हिसा से न होकर ऊपरी भाग को क्षितिज रेखा से विभाजित कर आकाश को नीले रंग से बनाया गया है आकार मे श्यामवर्णी बादलो के मध्य चंचला की कौंध को भी दर्शाया गया है।

(vi) इस शैली की विषयवस्तु मे दुर्गा सप्तश बिहारी सतसई, रागमाला, बारहमासा, षड्ऋतुवर्णन, नायक-नायिका भेद, रसिक के साथ उत्सवो, शिकार, पशु-पक्षी, प्रकृति का चित्रण भी हुआ स्त्रीयो के चित्र भी बनाए गए।

BSER-167/2020

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	(vii)	इस समय के चित्रकारों में साहिबराम, लालचितेरा, गोविन्द, गोपाल, सालिग्राम, त्रिलोकचन्द, घासीराम आदि थे।

समाप्त

BSER-167/2020